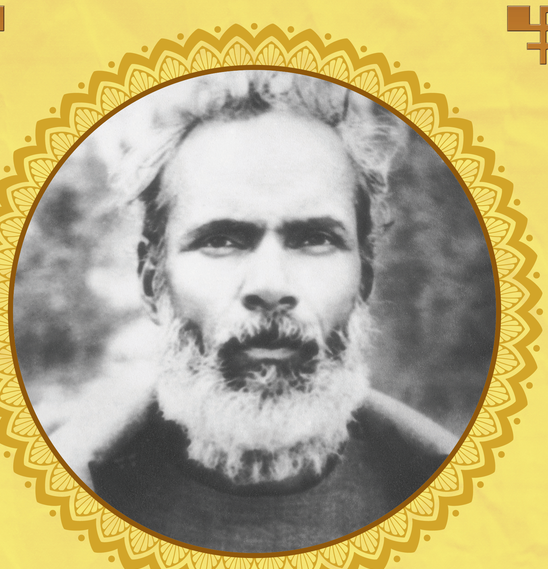
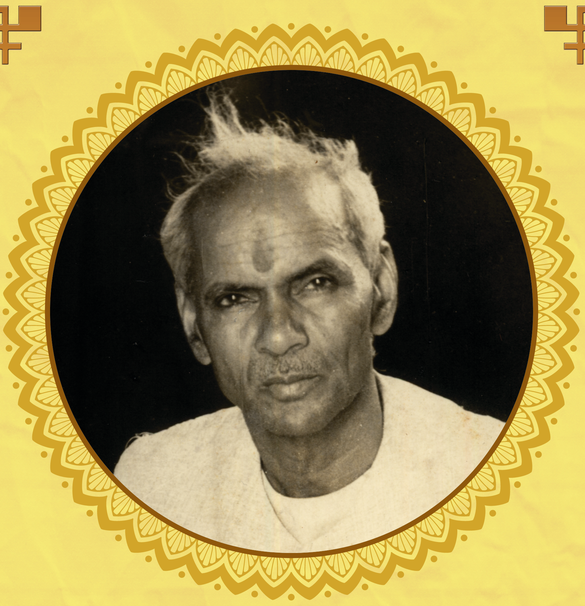


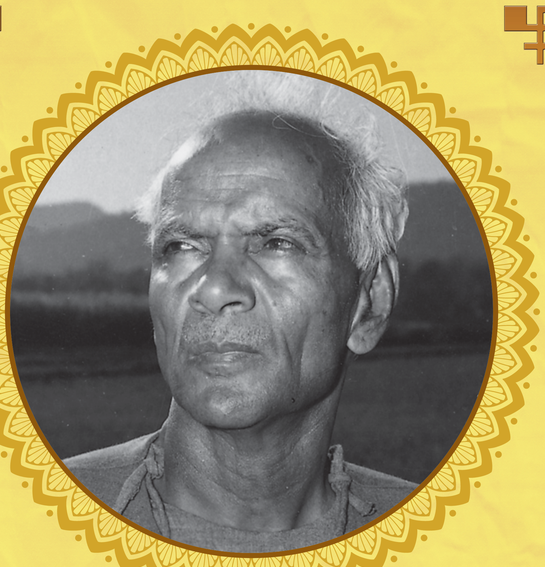
“व्यक्तित्व का निर्माण एक जटिल काम है। बहिरङ्ग क्रिया-कलापों में हेर-फेर करना सरल है। वस्तुओं को बदल लेना भी सरल है; पर गुण, कर्म, स्वभाव में हेर-फेर करना कठिन है। आदतें कितनी ढीठ होती हैं, इसे हर कोई जानता है। उन्हें बदलने के लिए कितने तापमान का मनोबल चाहिए, इसे अनुभवी ही जानते हैं और उस आत्म-संघर्ष को महाभारत जीतने जैसा बताते हैं। दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण कर लेने से आधी बात बनती है और आधी तब पूरी होती है, जब निराकरण से खाली हुए स्थान को उच्चस्तरीय सत्यप्रवृत्तियों से भरा जा सके। इसका अभ्यास लोक-मङ्गल के परमार्थ प्रयोजनों में संलग्न हुए बिना और किसी प्रकार सम्पन्न नहीं हो सकता।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“तुम अपने मन को अपने सद्गुरु का गुलाम बना दो। उन्हें अर्पित और समर्पित कर दो। यदि तुम ऐसा कर सके, तो इसकी एक ही कसौटी है कि अब तुम अपने लिए नहीं सोचोगे,न अतीत के लिए परेशान होगे,न वर्तमान के लिए विकल होगे और न ही भविष्य की चिन्ता करोगे। तुम्हारे लिए जो कुछ जरूरी होगा, वह सद्गुरु स्वयं करेंगे। तुम्हें तो अपने गुरु का यन्त्र बनना है।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“आप भगवान् के अनुग्रह तक पहुँच सकते हैं और भगवान् का अनुग्रह एवं जीवन-लक्ष्य प्राप्त करने वालों ने जिन्दगी के जो आनन्द उठाए हैं, वे उठा सकते हैं। शर्त यही है कि आप अपनी उपासना को भजन से आरम्भ तो करें, पर उसे वहीं तक सीमित न करें। उसके साथ-साथ में जीवन की साधना, स्वाध्याय, विचारों का परिमार्जन, संयम, अपनी जिन्दगी के छिद्रों का निराकरण और सेवा, इनको आप मिला दीजिए, फिर देखिए कि आपकी उपासना फलित होती है या नहीं? ऐसी है साधना, जिसको मैंने किया। मैं चाहता हूँ कि आपमें से हर एक आदमी को उसी तरीके से साधना करनी चाहिए जो कि सफल होती है और होती रहेगी।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



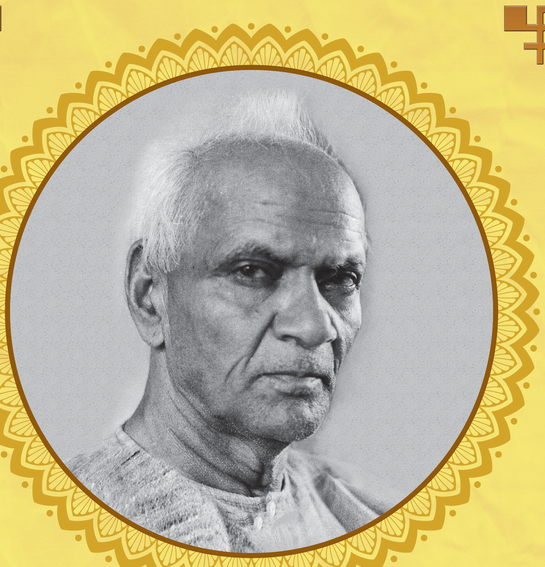
“साधना का प्रयोजन अपने भीतर की महानता को विकसित करना है। बाहर व्यापक क्षेत्र में भी दैवी शक्तियाँ विद्यमान हैं; पर उनके लिए समस्त विश्व की देखभाल का विस्तृत कार्यक्षेत्र नियत रहता है। व्यक्ति की भूमिका के अनुरूप प्रतिक्रिया उत्पन्न करने-सफलता और वरदान देने का कार्य उनके वे अंश ही पूरा करते हैं; जो बीज रूप में हर व्यक्ति के भीतर विद्यमान है। सूर्य का अंश आँख में मौजूद है। यदि आँखे सही हों, तो ही विराट् सूर्य के प्रकाश से लाभ उठाया जा सकता है। अपने कान ठीक हों तो ही बाहर के ध्वनि-प्रवाह की कुछ उपयोगिता है। इसी प्रकार अपने भीतर के हेय बीज यदि विकसित परिष्कृत हों, तो उनके माध्यम से विश्वव्यापी देवतत्वों के साथ सम्बन्ध जोड़ना आकर्षित करना और उनका सहयोग अनुग्रह प्राप्त कर सकना सम्भव हो सकता है।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“आस्तिकता का असली स्वरूप भुलाकर जो अविवेकपूर्ण धारणा हमने अपनाई, उसके कारण हम वस्तुतः ईश्वर से अधिकाधिक दूर होते गये। आस्तिकता के नाम पर हमने दिखावटी पूजा-पाठ का जो भाव अपनाया, उससे हमने पाया कुछ नहीं, केवल खोया ही खोया। युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत जिस आस्तिकता का प्रसार किया जा रहा है, उसमें जप, तप, हवन, पूजन, भजन, ध्यान, कथा, कीर्तन, तीर्थ, पाठ, व्रत, अनुष्ठान आदि के लिए परिपूर्ण स्थान है, पर साथ ही समस्त शक्ति लगाकर हर आस्तिक के मन में यह संस्कार जमाये जा रहे हैं कि ईश्वर को निष्पक्ष, न्यायकारी और घट-घट वासी समझते हुए कुविचारों और दुष्कर्मों से डरें और उनसे बचने का प्रयत्न करें। कर्त्तव्यपालन को ही ईश्वर की प्रसन्नता का सबसे बड़ा उपहार मानें और प्रभु की इस सुरम्य वाटिका-पृथ्वी में अधिकाधिक सुख-शान्ति विकसित करने के लिए एक ईमानदार माली की तरह सचेष्ट बने रहें।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“मनुष्य की मूल शक्ति विचारणा है। उसी के आधार पर इतनी प्रगति कर सकना उसके लिए सम्भव हुआ है। विचारों की उत्कृष्टता और निकृष्टता ही उसे ऊँचा उठाती एवं नीचे गिराती है। समस्याएँ विचारों की विकृति से उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान दृष्टिकोण बदलने से निकलता है। हम जो कुछ भले-बुरे काम होते देखते हैं, उन्हें विचार-पद्धति की प्रतिक्रिया मात्र कहा जा सकता है। हम रोज ही देखते हैं कि एक प्रकार के विचार दूसरे को देवता बनाते हैं और दूसरे प्रकार के विचार दूसरे को दानव की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देते हैं। सचमुच जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही बनकर रहता है। सोचने की दिशा में ही क्रिया बनती है और उसी की परिणति परिस्थितियों के रूप में सामने आती है। परिस्थितियों का अपने आप में कोई स्वतंत्र आधार नहीं है। वे हमारे कर्तृत्व का परिणाम मात्र हैं।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



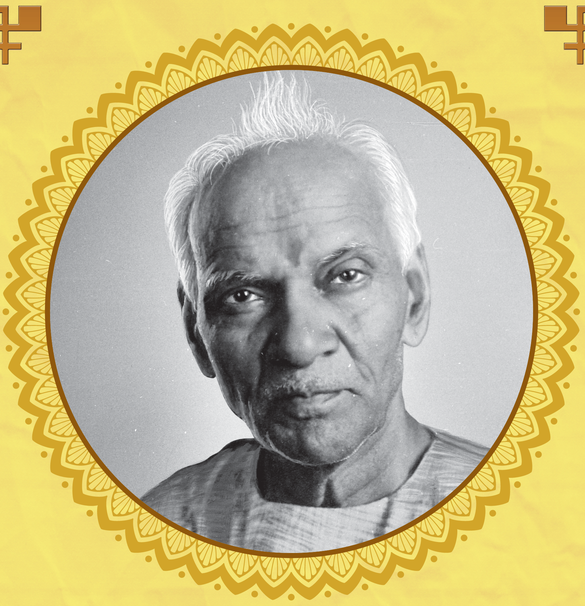
“जिस विश्व क्रान्ति का, युग निर्माण का लक्ष्य लेकर हम अग्रसर हो रहे हैं, वह तभी सम्भव है जब मनुष्य समाज में आदर्शवाद, कर्त्तव्य परायणता, आत्मीयता, उदारता, सेवा-भावना जैसे गुणों का विकास हो। श्रेष्ठ गुणों से ही मनुष्य की महानता प्रकाश में आती है। सम्पति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्ता-संगठन आदि विभूतियाँ कितनी ही बड़ी मात्रा में उपलब्ध हो जाने से मनुष्य श्रेष्ठ नहीं बन सकता और यदि उसका अन्तःकरण दुष्टता से भरा रहा, तो इनके द्वारा वह और भी अधिक अनर्थ करेगा। इसलिए विश्व-शान्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ सद्गुणों की सम्पदा को ही इस संसार में बढ़ाया जाना आवश्यक है। इसकी जितनी अभिवृद्धि होगी; उतना ही मानव जीवन में सुख-शान्ति का आधार सुदृढ़ होता चला जाएगा।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“बाह्य परिस्थितियों एवं बुद्धि वैभव को ही सब कुछ मानने की अपेक्षा भीतर झाँका जा सके, तो मालूम होगा कि कितनी ही प्रकार की सूक्ष्म शक्तियाँ अपने ही अन्दर मौजूद हैं; जिनका प्रायः सदुपयोग नहीं हो पाता । आत्मविस्मृति के कारण इच्छाओं, आकांक्षाओं का सुनियोजन नहीं हो पाता । वे मात्र सामान्य प्रयोजन पूरा करने तक रह जाती हैं । सुपर चेतन की दिव्य प्रेरणाओं के अनुरूप उन्हें गतिशील किया जा सके, तो महानता का वरण कर सकना हर व्यक्ति के लिए सुगम हो सकता है । ”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“अगले दिनों देवासुर संग्राम होने वाला है, उसमें मनुष्य और मनुष्य आपस में नहीं लड़ेंगे; वरन् आसुरी और दैवी प्रवृत्तियों में जमकर अपने -अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष होगा। असुरता अपने पैर जमाये रखने के लिए और देवत्व अपनी स्वर्गीय सम्भावनाएँ चरितार्थ करने के लिए भरसक चेष्टा करेंगे। इस विचार संघर्ष में देवत्व के विजयी हो जाने पर वे परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, जिनमें हर एक व्यक्ति को उचित न्याय, स्वातन्त्र्य, उल्लास, साधन और सन्तोष मिल सके।”

श्रीराम शर्मा आचार्य



“महानता की ओर बढ़ने और निम्नता की ओर गिरने की एक प्रक्रिया है, जिसको अपनाकर लोग ऊँचे उठते हैं और नीचे गिरते हैं। वह प्रक्रिया है – आन्तरिक देवासुर संग्राम। मनुष्य के हृदय में दैवी और आसुरी दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं। जो व्यक्ति अपने प्रयत्न एवं पुरुषार्थ द्वारा आसुरी वृत्तियों का शमन कर दैवी वृत्तियों का विकास कर लेता है, उन्हें पुष्ट और प्रबल बना लेता है, वह महानता की ओर उठ जाता है और जो व्यक्ति प्रमादवश ऐसा नहीं करते उनकी आसुरी प्रवृत्तियाँ प्रबल हो जाती हैं। इस प्रकार का आसुर्य प्रभावित व्यक्ति पतन के गर्त में गिर जाता है।”

श्रीराम शर्मा आचार्य